पूरी जो कढ़ाई से निकल भागी

कथा ज़ाकिर हुसैन
चित्र पूजा पोट्टनकुलम

गाँव में एक किसान और उसकी बीवी रहते थे। किसान का नाम था मनसा और उसकी बीवी का गुड़िया। उनके पास रुपया पैसा अच्छा ख़ासा था मगर घर में काम करने वाले आदमी कम थे।

इसलिए हमेशा दूसरों से मज़दूरी पर काम लेना पड़ता था। बैसाख का महीना था। मनसा के खेतों में गेहूँ की फ़सल खूब हुई थी। और खेत कट भी चुके थे।

अब पालियों पर दाएँ चला कर डालें निकालना बाक़ी था। दूसरे सब किसान भी अपने–अपने काम में लगे थे। उन दिनों जब फ़सल कटती है तो सब ही को काम होता है।

उसने भतेरा चाहा कि कोई मजदूर मिले, मगर न मिला। उधर आसमान पर बादल आने लगे और डर था कि कहीं पानी पड़ गया तो सब डालें ख़राब हो जायेंगी।

बीच में एक दिन कोई त्यौहार आ गया। सब किसानों ने अपने यहाँ काम बन्द रखा। इसलिए गाँव में बहुत से आदमियों को छुट्टी हो गई।

मनसा उनके पास गया और मुश्किल से पाँच आदमियों को फुसला कर लाया।

घर में आकर बीवी से कहा, "त्यौहार का दिन है। यह लोग आज काम को आए हैं, दोपहर को इन्हें जरा पूरियाँ खिलाना।"

कोई ग्यारह बजे बीवी ने चूल्हे पर कढ़ाई चढ़ाई। कड़वा तेल कढ़ाई में डाला। और पूरियाँ बेलकर डालनी शुरू कीं। कुछ पूरियाँ पक गईं तो बावर्चीख़ाने में किसान का बेटा बुद्धू आया और चीज़ें खखोरने लगा। होठों पर नाक बह रही थी।

माँ ने अपने पल्लू से इस ज़ोर से नाक पोंछी की बुद्धू कुन–कुन करता हुआ बावर्चीख़ाने से चल दिया। कढ़ाई में जो पूरी पड़ी थी वो इतनी देर में जलने लगी।

उसे बुरा लगा कि बुद्धू की माँ ने इतनी देर जलते हुए तेल में रखकर उसे तकलीफ दी।

बुद्धू की माँ ने जल्दी से उसे पलटना चाहा तो वह और चिढ़ गई और झट कढ़ाई में से कूदकर भाग खड़ी हुई और कहा कि "तुम बुद्धू की नाक पोंछो, मैं तो जाती हूँ।"

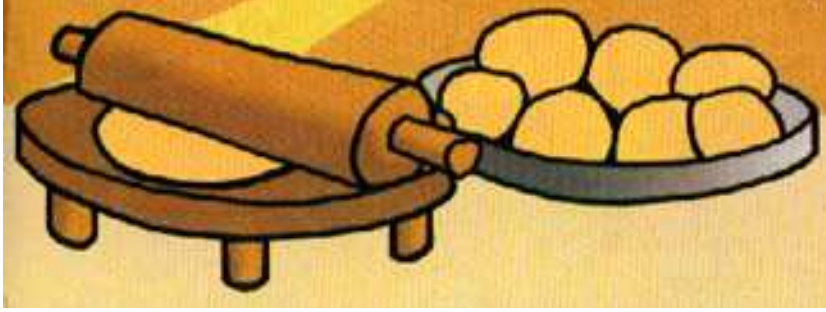

बुद्धू की माँ ने बहुत चाहा कि उसे पकड़े मगर वो कहाँ हाथ आती। झट घर से निकल कर खेत की तरफ़ भागी।

रास्ते में मनसा और उसके पाँचों दोस्त दानों पर दाएँ चला रहे थे।

यह पूरी उनके पास से गुज़री और कहा कि "मैं बुद्धू की माँ से बचकर, कढ़ाई से निकल कर आई हूँ। तुमसे भी बच कर निकलूँगी, लो मुझे कोई पकड़ो तो।"

उन आदमियों ने काम छोड़ा और पूरी के पीछे हो लिए मगर वो भला कहाँ हाथ आती। वह सब दौड़ते–दौड़ते हाँफने लगे और लौट आए।

खेत से निकल कर पूरी को बंजर में एक ख़रगोश मिला। उसे देखकर पूरी बोली, "मैं तो कढ़ाई से निकल कर, बुद्धू की माँ से बचकर और छह जवान आदमियों को हरा कर आई हूँ। मियाँ छुटदुमे ख़रगोश, तुम से भी निकल भागूँगी।"

ख़रगोश ने तेज़ी से उसका पीछा किया और अगर बी पूरी एक भिट में न घुस गई होती तो उसे छुटदुमे ने पकड़ ही लिया था। मगर भिट के अन्दर वो लोमड़ी के डर से न गया।

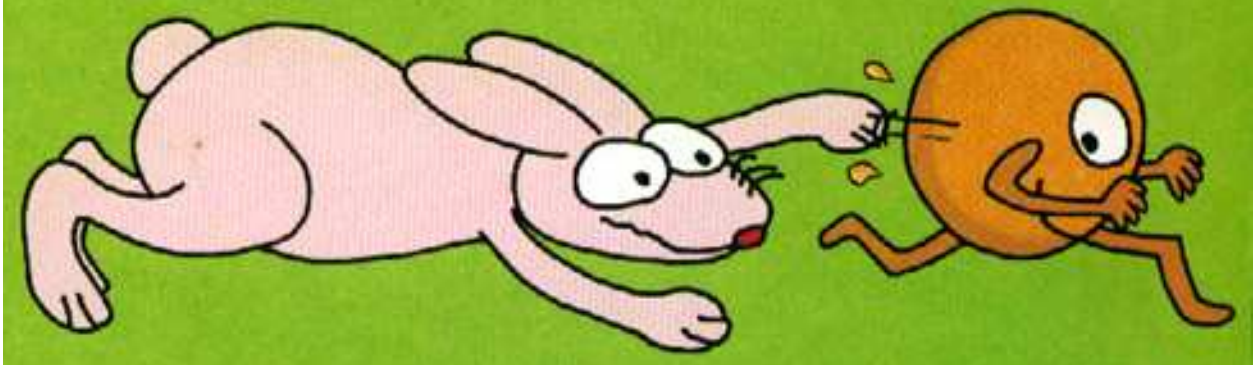

पूरी भिट में जो घुसी तो उसके अन्दर एक लोमड़ी बैठी थी। उसने जो देखा कि एक पूरी घुसी चली आ रही है तो झट उठ खड़ी हुई कि अब आई है तो जाएगी कहाँ।

मगर पूरी उल्टे पाँव लौटी और यह कहती हुई भागी, "मैं तो कढ़ाई में से निकल कर, बुद्धू की माँ से बचकर, छह जवान आदमियों को हराकर और मियाँ छुटदुमे ख़रगोश को उल्लू बनाती आई हूँ। बी मुटदुमी लोमड़ी मैं तुम्हारे बस की भी नहीं।"

लोमड़ी ने कहा, "कहाँ जाती है, ठहर तो। तेरी शेख़ी का मज़ा तुझे चखाती हूँ।" मगर पूरी थी बड़ी चालाक, उसने एक किसान के मकान का रूख़ लिया जहाँ कुत्ते थे और लोमड़ी भला कुत्तों के डर के मारे उधर कैसे जाती?

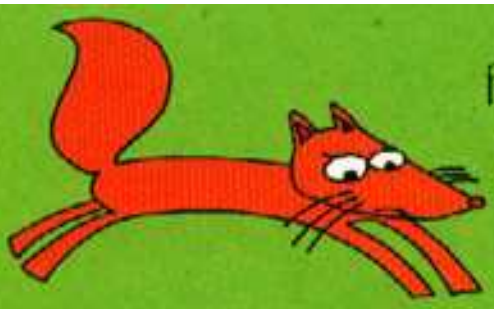

किसान के मकान के करीब एक दुबली–सी भूखी कुतिया और उसके पाँच बच्चे इधर–उधर फिर रहे थे।

पूरी ने कहा, "मैं कढ़ाई में से निकल कर, बुद्धू की अम्माँ से बचकर, छह जवान मर्दों को हराकर, मियाँ छुटदुमे खरगोश को उल्लू बनाकर और बी मुटदुमी लोमड़ी को चूना लगाकर आई हूँ। अजी बीबी लपलप, मैं तुम्हारे बस की भी नहीं।"

कुतिया बड़ी होशियार थी। कहने लगी, "बी पूरी क्या कहती हो, मैं ज़रा ऊँचा सुनती हूँ।" पूरी क़रीब आई और कुतिया ने भी बहरों की तरह अपना मुँह उसकी तरफ़ और बढ़ाया।

पूरी फिर वही कहने लगी। "मैं कढ़ाई में से निकलकर, बुद्धू की माँ से बचकर, छह–छह जवान मुसटन्डों को थकाकर, मियाँ छुटदुमे ख़रगोश और बी मुटदुमी लोमड़ी को उल्लू बनाकर आई हूँ। अजी बी..."
इतना ही कह पाई थी कि कुतिया ने मुँह मारा, "हप"!

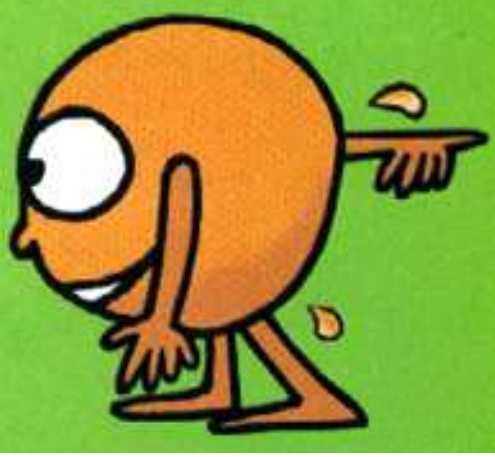

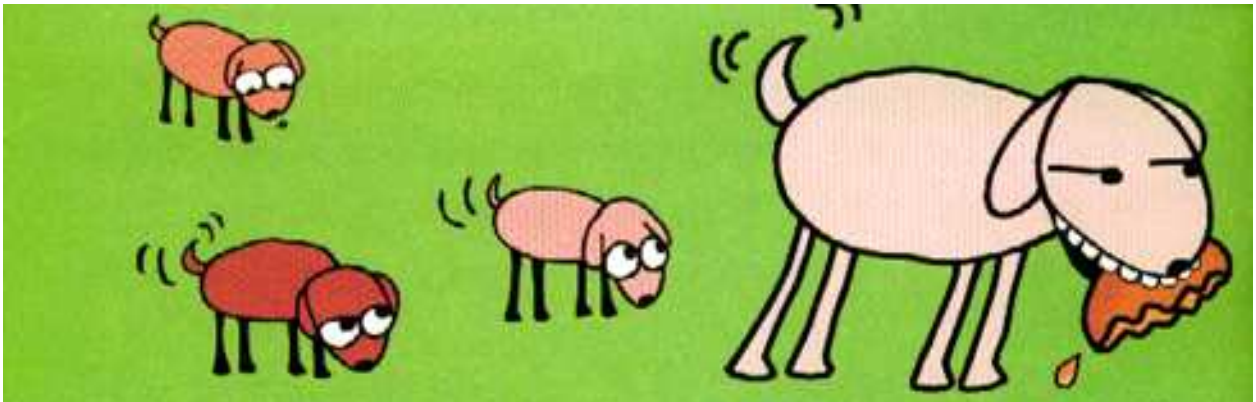

आधी पूरी उसके मुँह में आ गई। अब जो आधी पूरी बची थी वो ऐसी तेज़ी से भागी और आगे जाकर न मालूम किस तरह ज़मीन के अन्दर घुस गई कि कुतिया ढूँढते–ढूँढते थक गई मगर कहीं पता न चला।

कुतिया ने अपने पाँचों बच्चों को बुलाया कि ज़रा ढूँढो तो लेकिन बी पूरी का कहाँ पता लगना था। उस कुतिया ने और उसके बच्चों ने सारी उम्र उस आधी पूरी को ढूँढा मगर न मिलनी थी, न मिली।

अभी तक सारे कुत्ते उसी आधी पूरी की तलाश में हर वक़्त ज़मीन सूँघते फिरते हैं कि कहीं से उसका पता चले तो निकालें।

उसने हमारी दादी अम्माँ को धोखा दिया था। मगर उस आधी पूरी का कहीं पता नहीं चला।